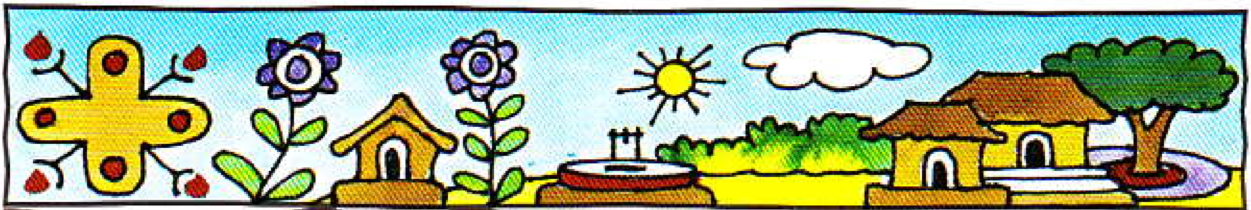

देश प्रदेश की लोक कथाएँ

भाग 1

राज्य संसाधन केन्द्र, प्रौढ़ शिक्षा, इन्दौर, म.प्र.

देश-प्रदेश की लोक कथाएँ

(भाग-1)

कोड नं. : 001 (II)

लेखक : नियति सप्रे

संपादन : तारा जायसवाल

चित्रांकन : इस्माइल लहरी

संस्करण : प्रथम, जून 2006

प्रतियाँ : 2000

मूल्य : रु. 9.00

प्रकाशक : **राज्य संसाधन केन्द्र, प्रौढ़ शिक्षा**
भारतीय ग्रामीण महिला संघ, म.प्र.
महालक्ष्मीनगर, सेक्टर आर, इन्दौर-452 010 (म.प्र.)
☎ 2551917, 2574104 Fax_0731-2551573
e-mail: literacy@satyam.net.in
srcindore@dataone.in
Web : www.srcindore.org

मुद्रक : **सिद्धार्थ ऑफसेट**
81, रवीन्द्र नगर, इन्दौर (म.प्र.)
☎ 0731-2493745

आमुख

साक्षरता अभियान एवं सतत शिक्षा कार्यक्रम के फलस्वरूप नवसाक्षर पठन-पाठन की ओर प्रवृत्त हुए हैं। इन नवसाक्षरों के सतत अभ्यास के लिए रोचक एवं मनोरंजक सामग्री का निर्माण हमारे केन्द्र द्वारा निरन्तर किया जा रहा है। कथाओं की तरफ नवसाक्षरों का रुझान स्वाभाविक है। इससे उनका मनोरंजन होता है। साथ ही साक्षरता कौशल का विकास भी होता है।

देश प्रदेश की लोककथाएँ भाग- 1 पुस्तिका नैतिक मूल्य की कथाओं का संग्रह है। इसकी लेखिका **श्रीमती नियति सप्रे** हैं। पुस्तिका हेतु आकर्षक चित्रांकन **श्री इस्माइल लहरी** द्वारा किया गया है। संसाधन केन्द्र इनके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता है।

आशा है, ये कथाएँ नवसाक्षरों को मनोरंजक लगेंगी। आपकी प्रतिक्रियाओं एवं अमूल्य सुझावों का सदैव स्वागत रहेगा।

कुन्दा सुपेकर

निदेशक

राज्य संसाधन केन्द्र,

प्रौढ़ शिक्षा, इन्दौर (म.प्र.)

चटोरी भानुमति

एक गाँव में नारायण नाम का एक किसान रहता था। उसकी पत्नी को मरे हुए दो साल हो गए थे। घर में काम करने वाला कोई नहीं था। अत: उसने भानुमति को घर के काम करने के लिए रख लिया।

भानुमति एक अच्छी नौकरानी थी। घर की साफ-सफाई, पशुओं की देखभाल आदि काम में वह होशियार थी। परन्तु खाने-पीने की चीजों की तरफ उसका बहुत ध्यान रहता था।

वह हमेशा रसोई में छिपकर कुछ न कुछ खाती रहती थी। नारायण ने उसे एक-दो बार रंगे हाथों पकड़ा। भानुमति पर कोई असर नहीं हुआ। वह साफ झूठ बोलकर बच निकलती।

एक दिन तंग आकर नारायण ने उससे कहा– 'आज के बाद तुमने चोरी से कुछ भी खाया तो मैं तुम्हें नौकरी से निकाल दूँगा।'

नौकरी जाने के भय से भानुमति थोड़ा संभल गई। एक दिन नारायण अच्छी किस्म के आम लाया। उसका दोस्त अनंत आने वाला था। उसने भानुमति को बुलाया और कहा– 'इन आमों के छिलके उतारकर काट दो। दोनों दोस्त मजे से खाएँगे।'

भानुमति को आम बहुत अच्छे लगते थे। मन को लाख समझाने के बावजूद वह अपने आप को रोक न सकी। आम के टुकड़े चखते–चखते पूरा आम ही खत्म हो गया। तभी नारायण की आवाज सुनाई दी– 'भानुमति, आम काटकर ले आओ। अनंत आता ही होगा।'

अब तो भानुमति की आँखों के आगे अंधेरा छा गया। उसे नौकरी जाने की चिंता सताने लगी। तभी उसे एक बात सूझी। उसने नारायण से कहा– 'मालिक, चाकू की धार बना दो। आम का छिलका बारीक नहीं उतर रहा।'

नारायण चाकू की धार बनाने लगा। दरवाजे पर अनंत आ पहुँचा। भानुमति उसे एक कोने में ले जाकर बोली– 'लगता है मालिक तुमसे नाराज हैं। चाकू की धार बनाते–बनाते बड़बड़ा रहे थे कि आज तो अनंत के कान ही काट दूँगा।'

अनंत ने अंदर झांककर देखा। नारायण मस्ती में गाना गुनगुनाते हुए चाकू तेज कर रहा था। बस फिर क्या था, अनंत सिर पर पाँव रखकर भागा। भानुमति ने नारायण से कहा– 'मालिक, आपका दोस्त मुझसे आम छीनकर भाग गया।'

नारायण हाथ में चाकू लिए अनंत के पीछे तेजी से भागा। अनंत और भी तेज दौड़ने लगा। नारायण चिल्ला रहा था।

'रुक तो जा भाई, कम से कम आधा काट के दे जा।'

अनंत ने सोचा- नारायण एक ही कान मांग रहा है। वह और भी तेज दौड़ने लगा। वह बेचारा दोबारा उस तरह कभी नहीं आया। नारायण भी थक, हारकर लौट आया।

घर का काम करते भानुमति सोचने लगी- आज तो मैं बच गई। आखिर इस तरह कब तक बच सकती हूँ। उसने निश्चय किया कि अब वह चोरी नहीं करेगी।

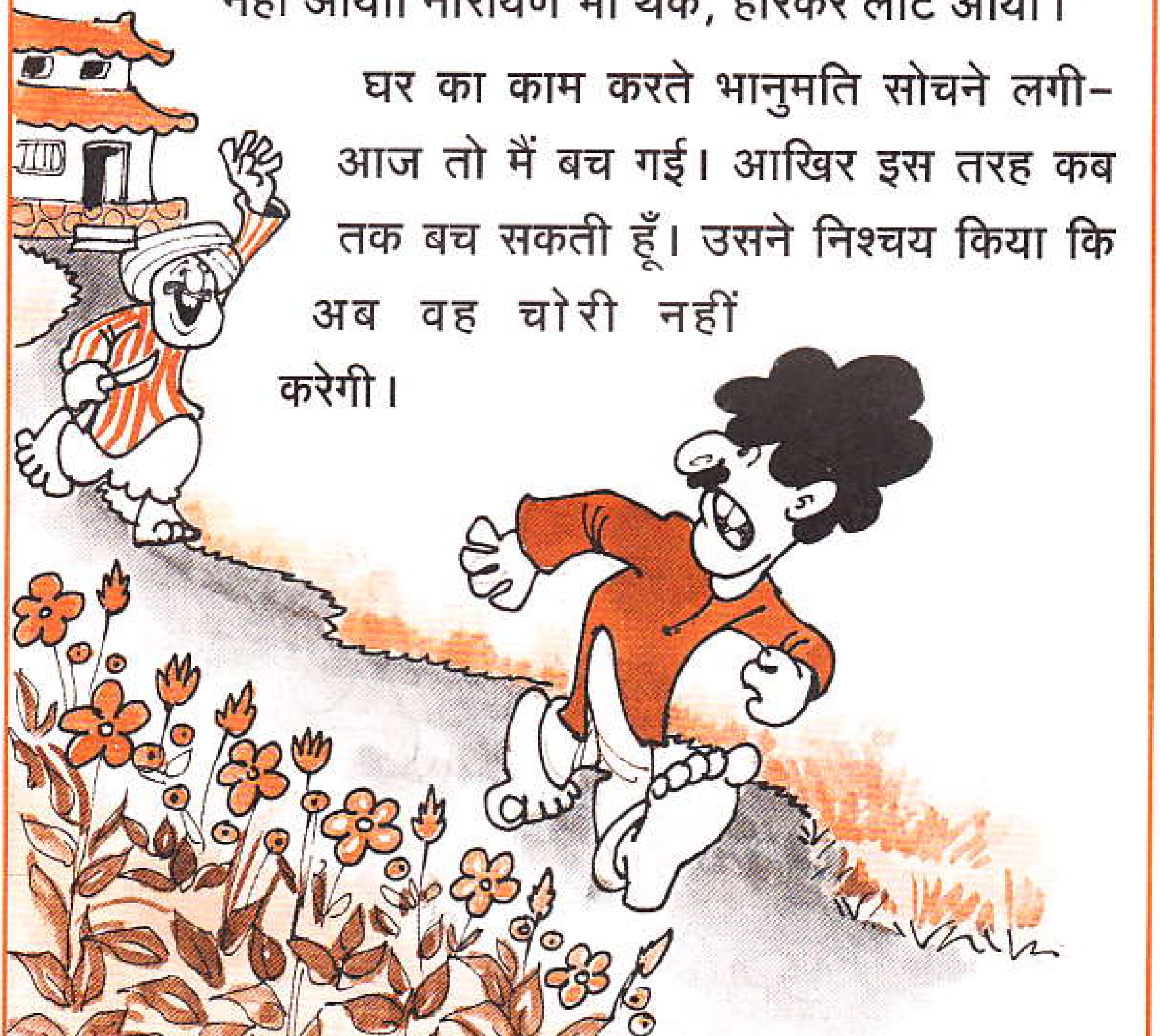

लोमड़ी का न्याय

एक ब्राह्मण घने वन से गुजर रहा था। तभी उसकी नजर पिंजरे पर पड़ी। पिंजरे में एक शेर बंद था। शेर ने ब्राह्मण से विनती की- 'आप मुझे पिंजरे से निकाल दें। भूख-प्यास से मेरी जान जा रही है। मैं कुछ खा-पीकर फिर पिंजरे मैं लौट आऊँगा।'

ब्राह्मण महाशय परेशान हो गए। यदि पिंजरा खोलते हैं तो शेर उन्हें खा सकता है। यदि नहीं खोलते हैं तो बेचारा शेर भूखा मारा जाएगा। अंत में उनकी दयालुता की जीत हुई। उन्होंने पिंजरे का दरवाजा खोल दिया।

शेर बाहर आते ही गरजकर बोला – 'मूर्ख मनुष्य तूने गलती की है। उसकी सजा भुगत। मैं तुझे ही खाऊँगा।'

ब्राह्मण भय के कारण थर–थर काँपने लगा। परंतु मन ही मन वह बचने का उपाय भी सोच रहा था। जैसे ही शेर ने झपट्टा मारने की कोशिश की, ब्राह्मण ने हिम्मत बटोरकर कहा– 'खाने से पहले चार लोगों से सलाह ले लो । यदि वे कहें कि यही न्याय है तो आप मुझे खा जाना।'

अब जंगल में और लोग कहाँ से आते? चार वन्य प्राणियों से राय लेने का तय हुआ। एक बूढ़ा–सा ऊँट सामने से गुजरा। उससे राय पूछी गई। वह मुँह बिचकाकर बोला– 'अरे ये इंसान कहीं दया के योग्य होते हैं ? मेरे मालिक को ही देखो । मैं जवान था तो खूब काम करवाता था। अब शरीर में ताकत नहीं है तो मुझे डंडों से मारता है।'

शेर की आँखें खुशी से चमकने लगीं। किंतु अभी तीन लोगों से सलाह और लेनी थी। पास में ही बरगद का विशाल वृक्ष था। उसे भी अपने मन की भड़ास निकालने का अवसर मिल गया। लँबी बाँहें फैलाकर बोला–'मनुष्य बहुत लोभी होता है। सूरज की तपती धूप से मैं इसकी रक्षा करता हूँ। सारी दोपहर मेरी छाँव में बिताता है। शाम को वह मेरी ही टहनियाँ काटकर ले जाता है। मेरे दूसरे भाई पेड़ों को काटता है। मेरी राय में तो सभी मनुष्यों को जान से मार देना चाहिए।'

यह उत्तर सुनकर ब्राह्मण की आँखों के आगे अंधेरा छाने लगा। तभी ढेंचू-ढेंचू की आवाज सुनाई दी। ब्राह्मण को कुछ आशा बँधी।

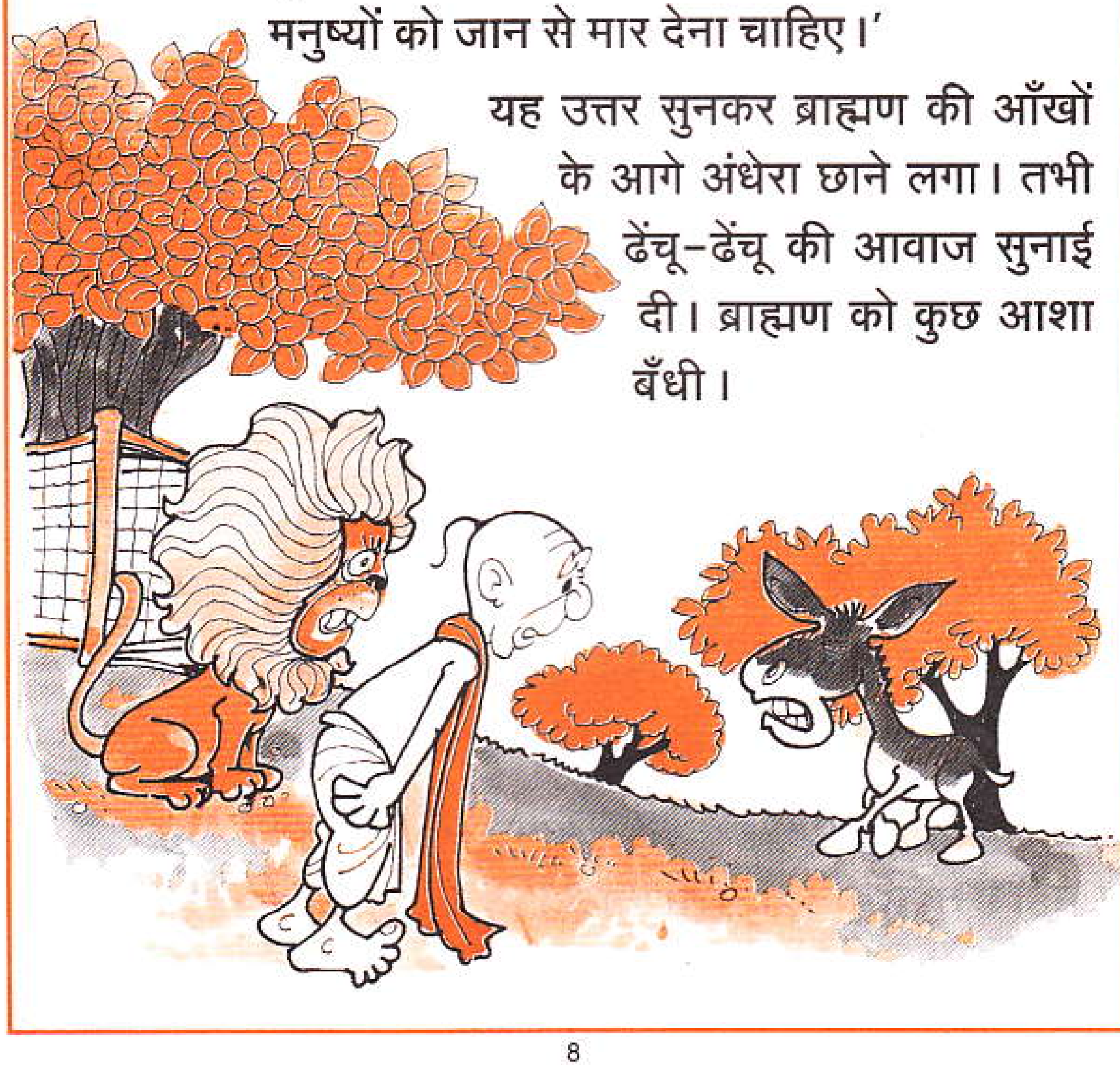

एक लँगड़ा गधा रेंकता हुआ उसी ओर आ रहा था।

शेर ने उससे भी प्रश्न किया –'क्या वह ब्राह्मण को खा सकता है ?'

गधे जी तो पहले से जले–भुने बैठे थे। शायद तभी पिटाई खाकर आ रहे थे। गुस्से से भरकर बोले– 'देखो न, मैं दिनभर मालिक का बोझा ढोता हूँ। और उफ तक नहीं करता। जो भी रूखा–सूखा मिल जाता है, वही खुशी से खा लेता हूँ। पर आज.........' कहकर वह रोने लगा।

शेर को गधे से क्या लेना–देना था? उसने अपना प्रश्न दोहराया– 'क्या मैं ब्राह्मण को खा लूँ?'

गधे ने आँसू पोंछकर कहा–'अवश्य मेरे मित्र, इसे बिल्कुल मत छोड़ना। इन मनुष्यों ने हमारी नाक में दम कर रखा है।'

अब एक ही पशु की राय और लेनी थी। शेर की निगाहें तेजी से इधर–उधर दौड़ने लगी। वहाँ एक लोमड़ी खड़ी थी जिसकी शेर से पुरानी दुश्मनी थी। वह पास आई और बोली– 'फैसला तो मैं कर दूँगी पर पहले ब्राह्मण माफी माँगे।'

ब्राह्मण ने पूछा – 'किस बात की।'

लोमड़ी ने कहा– 'तुम जंगलों, पेड़ों, नदी, तालाब, जानवर किसी का भी नुकसान नहीं करोगे।'

ब्राह्मण ने कहा– 'मैं पूरे मनुष्य जाति की ओर से माफी माँगता हूँ। वचन देता हूँ कि हम पेड़–पौधे नहीं काटेंगे।

नदी तालाब को दूषित नहीं करेंगे। जानवरों पर अत्याचार नहीं करेंगे।''

लोमड़ी कुछ देर चुपचाप खड़ी रही। फिर बोली–'मुझे तो विश्वास ही नहीं होता कि इतना बड़ा शेर पिंजरे में समा सकता है। शेर दादा जरूर झूठ बोल रहे हैं।'

शेर ने कहा–'मैं पिंजरे में बंद था।'

लोमड़ी बोली–'नहीं थे, हो ही नहीं सकते।'

शेर को लोमड़ी की बात पर गुस्सा आ गया। वह छलाँग लगाकर पिंजरे में जा पहुँचा। लोमड़ी ने झट से दरवाजा बंद कर दिया। वह ब्राह्मण से बोली– 'आप अपने घर जाएँ और अपनी कही हुई बात को ध्यान में रखें। और बिना सोचे-समझे कोई काम मत करना।'

ब्राह्मण सकुशल अपने गाँव वापस आ गया।

❑

ईर्ष्यालु चाचा

एक गाँव में होमेन नामक युवक रहता था। उसके पिता मर चुके थे। माँ ने ही उसे पाल-पोसकर बड़ा किया था।

होमेन के चार चाचा थे। वे उससे बहुत जलते थे।

एक दिन उसके चाचाओं ने होमेन की झोपड़ी में आग लगा दी। होमेन और उसकी माँ बेघर हो गए। होमेन की माँ रोने लगी। माँ के आँसू देखकर होमेन तिलमिला उठा। उसने राख इकट्ठी की और दूसरे गाँव में जा पहुँचा।

वह आवाज लगाने लगा- 'ले लो, आँखों का सुरमा ले लो। इसे लगाकर गड़ा धन मिल जाता है। जिसका ब्याह न होता हो, जल्दी ब्याह हो जाता है।'

हाथों-हाथ एक थैली सुरमा बिक गया। शेष राख होमेन ने छिपा दी। अपने चाचा के पास जाकर बोला- 'मेरी तो झोपड़ी की सारी राख बिक गई।'

चाचा ने हैरानी से पूछा- 'राख बिक गई?'

'हाँ, इसमें क्या शक है?' कहकर उसने पैसे दिखाए। होमेन ने उन्हें उकसाया कि वे भी अपनी झोपड़ी जला दें।

उसकी राख गाँव में बेच आएँ। बड़ी झोपड़ी की तो राख भी ज्यादा होगी।'

उसके सारे चाचा बातों में आ गए। चारों ने अपने-अपने घर फूँक दिए। वे राख बेचने जाने की तैयारी करने लगे। होमेन ने कहा- 'गाँव वालों से कहना हमें सुरमे वाले ने भेजा है।'

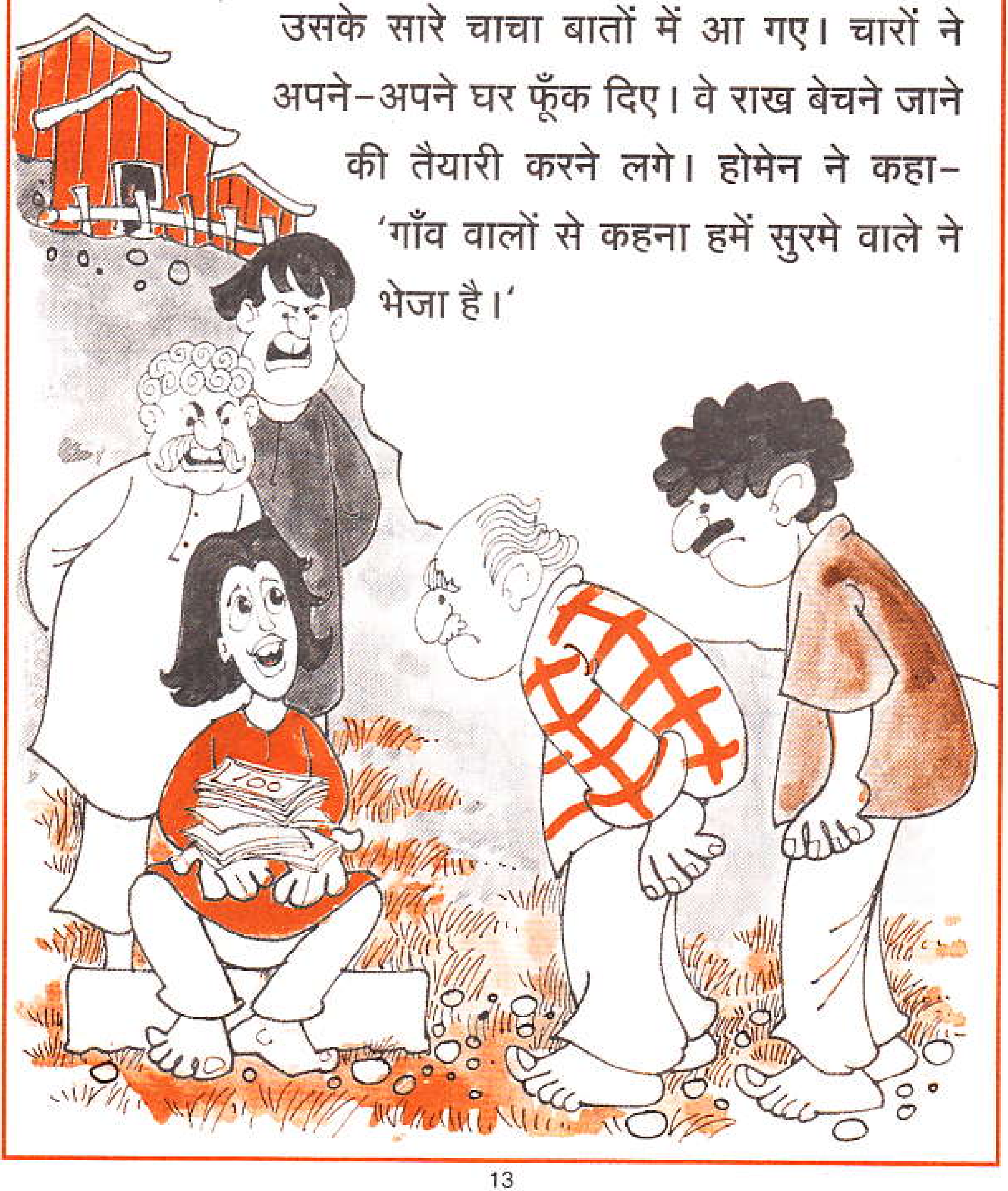

वे चारों गाँव में पहुँचे। ज्यों-ही उन्होंने सुरमे वाले का नाम लिया, सारा गाँव उनके पास पहुँच गया। देखते ही देखते लाठियाँ उन पर पड़ने लगीं। बिचारे पिटते-पिटते घर पहुँचे।

चारों ने गुस्से के मारे होमेन को मारने की योजना बना ली। उन्होंने होमेन को नदी किनारे रस्सी से बाँधा और खुद भात खाने घर चले गए। उनके जाते ही वहाँ से एक सौदागर गुजरा।

उसने होमेन से पूछा-'क्यों भाई तुम्हें क्यों बाँधा है ?'

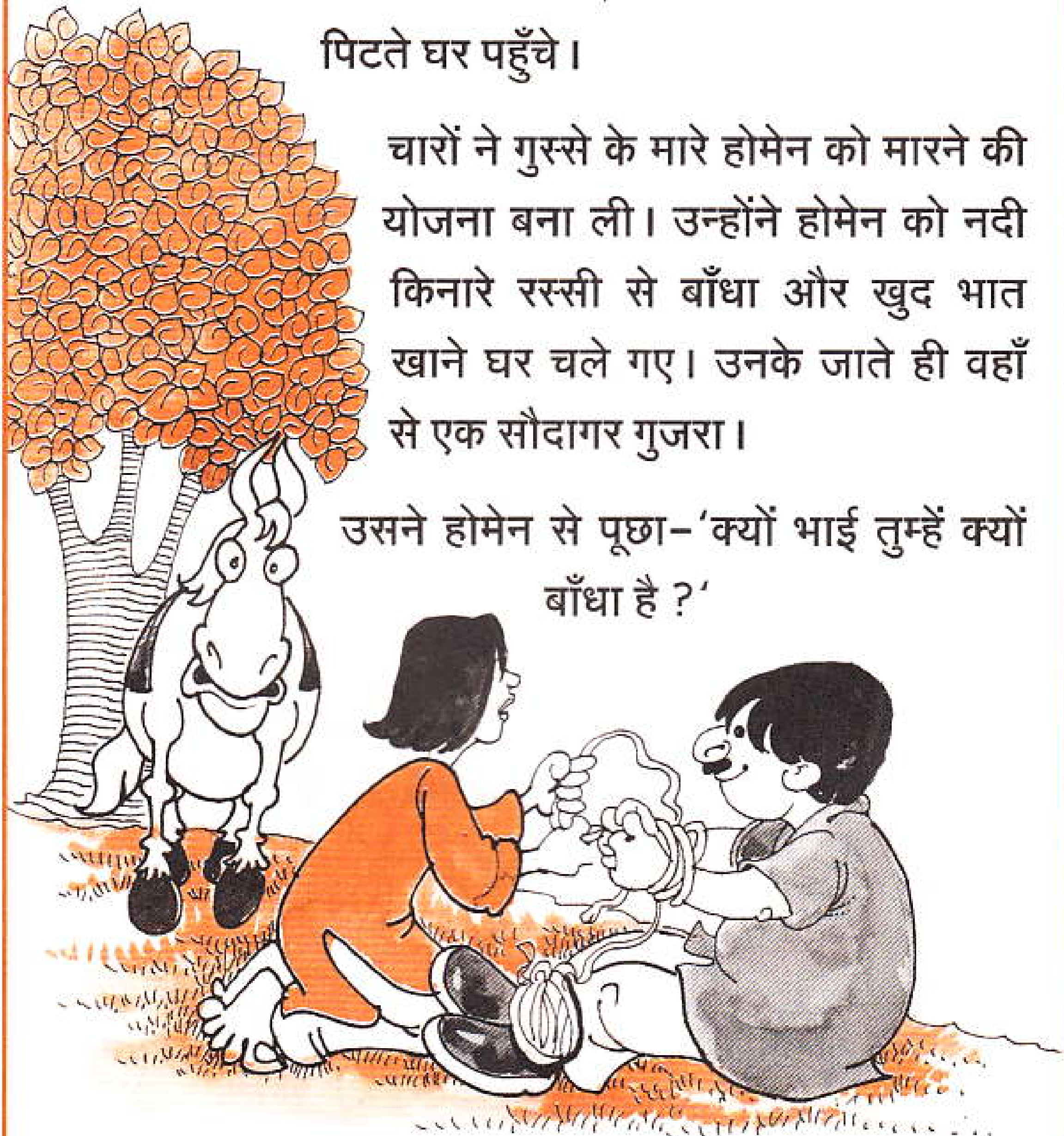

होमेन ने बात बनाई– 'मेरे चाचा मेरी शादी एक खूबसूरत लड़की से करना चाहते हैं। मेरे मना करने पर मुझे बाँध दिया।'

सौदागर बोला– 'मैं शादी कर लेता हूँ उस लड़की से। क्या ऐसा हो सकता है ?'

होमेन ने झट से उसे बांधा। फिर उसका घोड़ा लेकर रफू–चक्कर हो गया। चारों चाचा खा–पीकर लेट गए। आलस के मारे उठा न गया। पिटाई के कारण शरीर भी दु:ख रहा था। नौकर से बोले– 'जा, तू होमेन को नदी में फेंक आ, हमसे तो उठा नहीं जाता।'

नौकर भी कम नहीं था। उसने अपने रिश्तेदार को यह काम सौंप दिया। रिश्तेदार ने सौदागर को ही होमेन समझकर नदी में फेंक दिया। बेचारा सौदागर चिल्लाता ही रह गया। नौकर ने चाचा को सूचना दी– काम हो गया।

चारों मिलकर होमेन की मौत की खुशी मनाने लगे। होमेन ने सब कुछ पेड़ के पीछे से छुपकर देखा। वह घोड़ा लेकर चाचाओं के पास आया। सबको प्रणाम कर बोला–'नौकर ने गहरा धक्का नहीं दिया इसलिए केवल घोड़ा मिला। यदि और गहरा डूबता तो शायद बैल, गाय व हाथी भी लाता।'

चारों लालची चाचा उसकी बातों में आ गए। होमेन को पुचकारकर पूछा–'क्या सचमुच नदी में पशु मिल रहे हैं?'

'हाँ, हाँ आप लोग भी ले आओ।' होमेन ने कहा।

चारों चाचा आलस छोड़कर नदी की तरफ लपके। नौकर को भी साथ ले लिया। तट पर पहुँचकर नौकर को आदेश दिया 'हम सबको जोर से पानी में धकेल दो।' नौकर ने आज्ञा का पालन किया।

होमेन को सदा के लिए ईर्ष्यालु, दुष्ट चाचाओं से मुक्ति मिल गई।

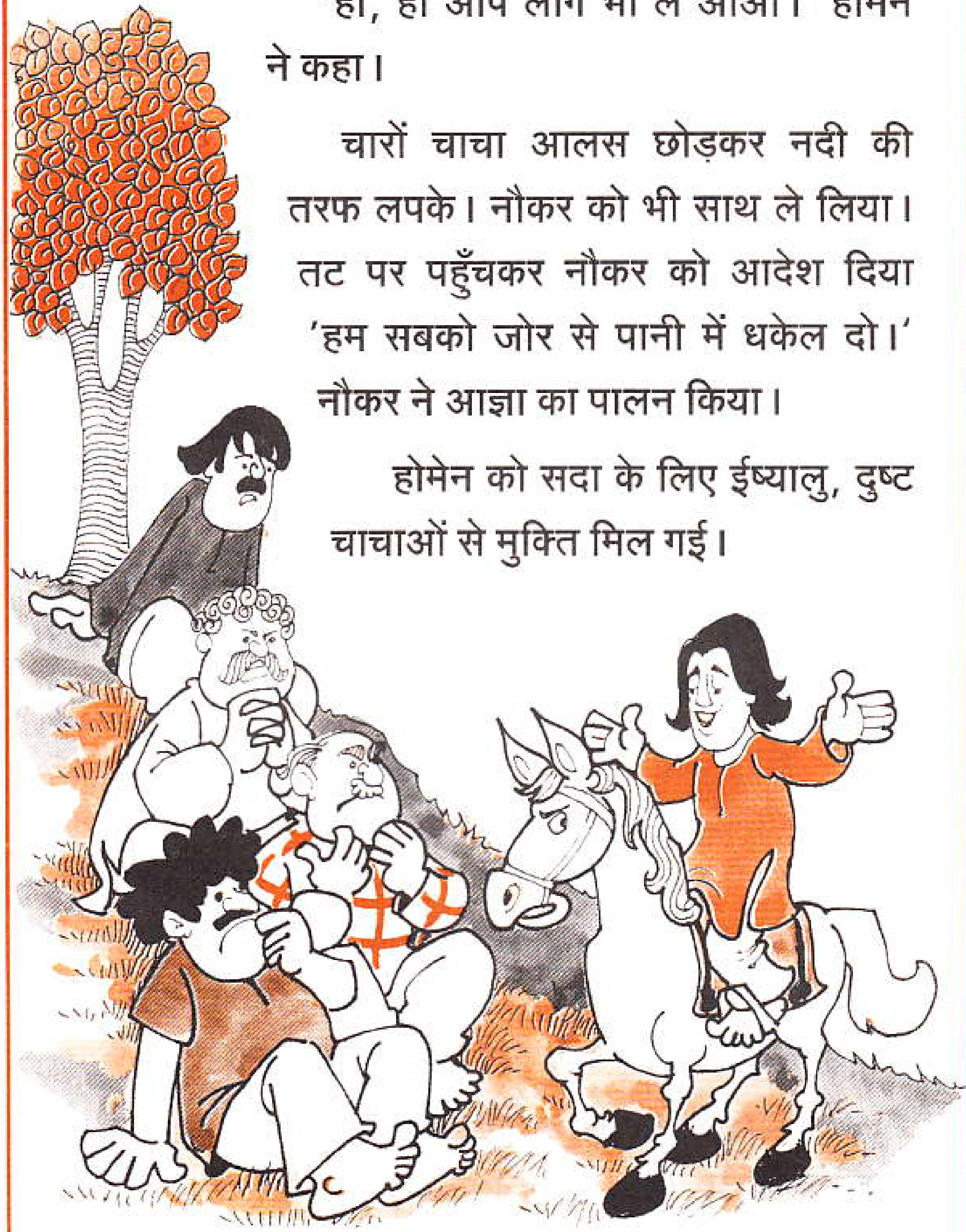

हमारे प्रकाशन

श्रेष्ठ कौन	7.00
रोटी का सवाल	7.00
मन का चोर	9.00
कजरी	8.00
रोबोट	8.00
छत्तीसगढ़ की लोककथाएं-1	9.00
छत्तीसगढ़ की लोककथाएं-2	9.00
कटौती में गंगा	8.00
सच्ची प्रार्थना	8.00
दो कुओं की कहानी	9.00
सहोदरा	9.00
सच्ची तीर्थ यात्रा	10.00
चिंगारी	8.00
संत कबीरदास व संत सिंगाजी	9.00
संत रविदास	8.00
मीराबाई	8.00
गोस्वामी तुलसीदास	8.00
नया जन्म	8.00
सच्चा न्याय	8.00
सूरदास	9.00
गुरु नानकदेव	10.00
लाले का उस्ताद	8.00
निमाड़ी लोककथाएँ	9.00
झूठ की सजा	8.00
गौतम बुद्ध	9.00
महावीर स्वामी	9.00
ईसा मसीह	9.00
वाणी का कमाल	8.00
मंगू का सपना	8.00
कमजोरी का स्वयंवर	9.00
नैतिक कथाएँ भाग 1	8.50
नैतिक कथाएँ भाग 2	8.00
मानव धर्म	9.00
सुनो कहानी	8.50
सुनहरा नेवला	7.00
जैसी करनी वैसी भरनी	9.00
बीरबल की चतुराई	8.00
गाँव की लड़की	9.00
कैलाशी नानी	9.00

प्रकाशक

राज्य संसाधन केन्द्र, प्रौढ़ शिक्षा

भारतीय ग्रामीण महिला संघ, इन्दौर, म.प्र.

महालक्ष्मीनगर, सेक्टर आर, इन्दौर-452 010 (म.प्र.)

फोन 2551917, 2574104 फैक्स 0731-2551573

मुद्रक - सिद्धार्थ ऑफसेट, इन्दौर- 9 फोन - 0731-2493745